7 जुलाई, 2024

पिन्तेकुस्त के बाद सातवाँ रविवार

बहुत छोटी शुरुआत से परमेश्वर बड़े परिणामों को उत्पन्न करता है

भजन संहिता अध्याय 131

हाग्गै अध्याय 2 वचन 1 से 9 तक

1 कुरिन्थियों अध्याय 1 वचन 26 से लेकर अध्याय 2 वचन 5 तक

मरकुस अध्याय 4 वचन 26 से लेकर 34 तक

सुप्रभात, प्रिय कलीसिया। आज, हम एक सामर्थी विषय पर विचार करने के लिए एकत्रित हुए हैं: "बहुत छोटी शुरुआत से परमेश्वर बड़े परिणामों को उत्पन्न करता है।" यह विषय मनुष्य के अनुभव के साथ गहराई से गूँजता है, क्योंकि हम अक्सर अपनी यात्राएँ सादगी भरी शुरुआत से शुरू करते हैं और विश्वास और दृढ़ता के माध्यम से ही, अपने जीवन में ईश्वर के प्रतापी कार्यों को देखते हैं। जब हम आज के वचनों को पढ़ते हुए अपना मन लगाते हैं, तो आइए हम अपने मनों को ईश्वर के द्वारा प्रदान की जाने वाली बुद्धि और प्रोत्साहन के लिए खोलें, जिसे वह हमें प्रदान करना चाहता है।

1. परमेश्वर के समय पर भरोसा रखें: भजन संहिता अध्याय 131

भजन 131 एक छोटा तौभी गंभीर भजन है, जो ईश्वर में विनम्रता और भरोसे के सार को दर्शाता है। भजनकार लिखता है कि: "हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है; और जो बातें बड़ी और मेरे लिए अधिक कठिन हैं, उनसे मैं काम नहीं रखता। निश्चय मैं ने अपने मन को शान्त और चुप कर दिया है, जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी माँ की गोद में रहता है, वैसे ही दूध छुड़ाए हुए लड़के के समान मेरा मन भी रहता है। हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा ही पर आशा लगाए रह!" यह भजन हमें परमेश्वर के समय और उसकी योजना पर भरोसा करने के महत्व को सिखाता है। यह हमें जीवन को सादगी के साथ जीने की याद, यह स्वीकार करते हुए दिलाता है कि हमारी समझ सीमित है। एक दूध छुड़ाए बच्चे की तरह जो अपने माता-पिता की देखभाल पर भरोसा करता है, हमें भी परमेश्वर के मार्गदर्शन पर भरोसा करने के लिए कहा गया है, उस समय पर भी जब हम बड़ी तस्वीर को नहीं देख सकते हैं। छोटी शुरुआत के लिए अक्सर धैर्य और विश्वास की आवश्यकता होती है, तब जब हम परमेश्वर के द्वारा उसकी बड़ी योजना को हम पर प्रकट करने की बाट जोहते हैं।

2. भविष्य में होने वाली महिमा का वादा: हाग्गै अध्याय 2 वचन 1 से लेकर 9 तक

हाग्गै की पुस्तक में, हम देखते हैं कि इस्राएलियों को मंदिर के पुनर्निर्माण के निराशा से भरे कार्य का सामना करना पड़ रहा है। सुलैमान के मंदिर की पूर्व महिमा की तुलना में नया मंदिर महत्वहीन जैसा दिखाई दे रहा था। तौभी, भविष्यद्वक्ता हाग्गै के द्वारा, परमेश्वर हमें प्रोत्साहन का यह संदेश देता है: "इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहली महिमा से बड़ी होगी, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, और इस स्थान में मैं शान्ति दूँगा, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।'" परमेश्वर अपने लोगों को आश्वस्त करता है कि उनके प्रयास, हालाँकि वे छोटे और अप्रभावी लगें, तौभी वे कुछ और बड़े की ओर ले जाएँगे। भविष्य की महिमा का यह वादा हमें दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, तब भी जब हमारी शुरुआत हमें मामूली सी लगती है। परमेश्वर हमारे प्रयासों में संभावना देखता है और वादा करता है कि परिणाम हमारी अपेक्षाओं से कहीं अधिक बढ़कर होंगे।

3. परमेश्वर नम्र लोगों को चुनता है: 1 कुरिन्थियों अध्याय 1 वचन 26 से लेकर अध्याय 2 वचन 5 तक

प्रेरित पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया को संबोधित करते हुए, उन्हें उनकी सादगी से भरी शुरुआत और परमेश्वर के बुलाहट की परिवर्तन लाने वाली सामर्थ्य की याद दिलाता है: हे भाइयों और बहिनों, अपने बुलाए जाने को तो सोचो कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे।" पौलुस इस बात पर जोर देते हुए कहता है कि परमेश्वर अक्सर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नम्र और दीन लोगों को ही चुनता है। यह चुनाव सामर्थ्य या बुद्धि के सांसारिक मापदण्डों पर आधारित नहीं है, वरन् परमेश्वर की प्रभुता सम्पन्न इच्छा पर आधारित है। हमारी कमजोरियों और छोटी शुरुआतों के माध्यम से ही परमेश्वर की सामर्थ्य प्रकट होती है, और यह बड़े परिणामों को लाती है, जो कि उसकी महिमा को दर्शाते हैं।

4. राई के दाने का दृष्टांत: मरकुस अध्याय 4 वचन 26 से लेकर 34 तक

मरकुस के सुसमाचार में, यीशु ने परमेश्वर के राज्य को समझाने के लिए राई के दाने का दृष्टान्त बताया है: "परमेश्वर का राज्य राई के दाने के समान है : जब भूमि में बोया जाता है, तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब सागपात से बड़ा हो जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी डालियाँ निकलती हैं कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।" यह दृष्टांत हमारे विषय के सार को बड़ी सुन्दरता से अपने में थाम लेता है। राई का दाना, हालाँकि बहुत छोटा होता है, तौभी यह एक बड़े पौधे में बदल जाता है, जो छाया और आश्रय प्रदान करता है। यीशु हमें सिखाता है कि परमेश्वर का राज्य अक्सर छोटे, परन्तु मामूली से दिखाई देने वाले तरीकों से शुरू होता है, लेकिन

यह हमारी कल्पना से कहीं परे बढ़ता और फैलता चला जाता है। हमारा विश्वास, चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, तौभी यह पोषित और विकसित होने पर बड़े परिणामों को उत्पन्न करने की योग्यता रखता है।

निष्कर्ष

प्रियों, जब हम इन वचनों पर मनन करते हैं, तो हम याद रखें है कि परमेश्वर छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ें परिणामों को लेने आने में माहिर है। चाहे वह किसी दूध छुड़ाए हुए बच्चे शांत भरोसा क्यों न हो, या भविष्य की महिमा का वादा क्यों हो, नम्र लोगों का बुलाया जाना ही क्यों न हो, या फिर राई के दाने का बढ़ना ही क्यों न हो, हम देखते हैं कि परमेश्वर के तरीके अक्सर मनुष्य की अपेक्षाओं को नकार देते हैं। आइए हम अपनी सादगी से भरी शुरुआत को विश्वास और भरोसे के साथ, यह जानते हुए अपना बना लें कि परमेश्वर अपने प्रतापी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमारे भीतर और हमारे माध्यम काम कर रहा है।

प्रार्थना

हे हमारे स्वर्गीय पिता, हम आपकी गहरी बातों के लिए आपको धन्यवाद देते हैं, जो आज आपने अपने वचन के माध्यम से हमें सिखाई हैं। हमें आपके समय और आपकी योजना पर भरोसा करने में मदद करें, तब भी जब हमें हमारी शुरुआत छोटी और महत्वहीन लगें। हमारे विश्वास को मजबूत करें, ताकि हम दृढ़ बने रहें और उन बड़े परिणामों को देखें, जिन्हें आपने हमारे लिए रखा है। हे प्रभु, हमें याद दिलाएँ कि आपकी सामर्थ्य हमारी कमजोरी में ही सिद्ध होती है और आप अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए विश्वास के सबसे छोटे कार्यों का भी उपयोग कर सकते हैं। हे प्रभु, हमें संदेह और अनिश्चितता के समय में सांत्वना दें। हमें इस ज्ञान से उत्साहित करें कि आप हमेशा हमारे साथ हैं, हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं और हमारे माध्यम से काम कर रहे हैं। हमारे जीवन का उपयोग आपकी महिमा को प्रगट करने के लिए करें और हमारे द्वारा हमारे आस-पास के लोगों में आशा लाए। हम यह प्रार्थना हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम से करते हैं। आमीन।

(विवारिये उपदेश - द रेव्ह. डा. डी.जे अजित कुमार, जनरल सेक्रेटरी, सी.एन.आई, सिनेड
(हिंदी अनुवाद - द रेव्ह. जितेन्द्र जीत सिंह - करनाल, हरियाणा)